Shri Uma Devi Mahima The manifestation of Uma

श्रीउमादेवीमहिमा अथवा उमाप्रादुर्भाववर्णनम्

Document Information

Text title: umAmahimA The manifestation of Uma with Hindi English translation

File name : umAmahimA.itx

Category : devii, pArvatI, devI

Location : doc_devii

Transliterated by : Akash Pandeya, NA

Proofread by : Akash Pandeya, NA

Description/comments : shivapurANa, umAsaMhitA, adhyAya 49 verses 27-39

Latest update: June 25, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 25, 2021

sanskritdocuments.org



Shri Uma Devi Mahima The manifestation of Uma

श्रीउमादेवीमहिमा अथवा उमाप्रादुर्भाववर्णनम्



मुनय ऊचुः। उमाया भुवनेशान्यास्सूत सर्वार्थवित्तम । अवतारं समाचक्ष्व यतो जाता सरस्वती ॥ १॥ या गीयते परब्रह्ममूलप्रकृतिरीश्वरी । निराकारापि साकारा नित्यानन्दमयी सती ॥ २॥ सूत उवाच। तापसाः शुणुत प्रेम्णा चरित्रं परमं महत्। यस्य विज्ञानमात्रेण नरो याति परां गतिम् ॥ ३॥ देवदानवयोर्युद्धमेकदासीत्परस्परम् । महामायाप्रभावेणामराणां विजयोऽभवत् ॥ ४॥ ततोऽवलिप्ता अमरास्स्वप्रशंसां वितेनिरे । वयं धन्या वयं धन्याः किं करिष्यन्ति नोऽसुराः ॥ ५॥ ये प्रभावं समालोक्यास्माकं परमदुःसहम् । भीता नागालयं याता यातयातेति वादिनः ॥ ६॥ अहो बलमहो तेजो दैत्यवंशक्षयङ्करम् । अहो भाग्यं सुमनसामेवं सर्वेऽभ्यवर्णयन् ॥ ७॥ तत आविरभूत्तेजः कूटरूपन्तदैव हि । अदृष्टपूर्वं तदृष्ट्वा विस्मिता अभवन्सुराः ॥ ८॥ किमिदं किमिदं चेति रुद्धकण्ठास्समब्रुवन। अजानन्तः परं श्यामानुभावं मानभञ्जनम् ॥ ९॥ तत आज्ञापयद्वेवान्देवानामधिनायकः । यात यूयं परीक्षध्वं याथातथ्येन किन्विति ॥ १०॥

सुरेन्द्रप्रेरितो वायुर्महसः सन्निधिं गतः । कस्त्वं भोरिति सम्बोध्यावोचदेनं च तन्महः ॥ ११॥ इति पृष्टस्तदा वायुर्महसातिगरीयसा । वायरस्मि जगत्प्राणस्साभिमानोऽब्रवीदिदम् ॥ १२॥ जङ्गमाजङ्गमं सर्वमोतप्रोतमिदं जगत्। मय्येव निखिलाधारे चालयाम्यखिलं जगत् १३॥ तदोवाच महातेजः शक्तोऽसि यदि चालने । धृतमेतत्तृणं वायो चालयस्व निजेच्छया ॥ १४॥। ततः सर्वप्रयत्नेनाकरोद्यतं सदागतिः । न चचाल यदा स्थानात्तदासौ लिज्जितोऽभवत ॥ १५॥ तृष्णीं भूत्वा ततो वायुर्जगामेन्द्रसभां प्रति । कथयामास तदु वृत्तं स्वकीयाभिभवान्वितम् ॥ १६॥ सर्वेशत्वं वयं सर्वे मुषेवात्मनि मन्महे । न पारयामहे किञ्चिद्विधातुं क्षुद्रवस्त्विप ॥ १७॥ ततश्च प्रेषयामास मरुत्वान्सकलान्सुरान् । न शेकुस्ते यदा ज्ञातुं तदेन्द्रः स्वयमभ्यगात् ॥ १८॥ मघवन्तमथायान्तं दृष्ट्वा तेजोतिदुःसहम्। बभूवान्तर्हितं सद्यो विस्मितोऽभूच वासवः ॥ १९॥ चरित्रमीदृशं यस्य तमेव शरणं श्रये। इति सञ्चिन्तयामास सहस्राक्षः पुनःपुनः ॥ २०॥ एतस्मिन्नन्तरे तत्र निर्व्याजकरुणातनुः । तेषामनुग्रहं कर्तुं हर्तुं गर्वं शिवाङ्गना ॥। २१॥ चैत्रशुक्कनवम्यां तु मध्याह्रस्थे दिवाकरे । प्रादुरासीदुमा देवी सचिदानन्दरूपिणी ॥ २२॥ महोमध्ये विराजन्ती भासयन्ती दिशो रुचा। बोधयन्ती सुरान्सर्वान्ब्रह्मैवाहमिति स्फुटम् ॥ २३॥ चतुर्भिर्द्धती हस्तैर्वरपाशाङ्कशाभयान् । श्रुतिभिस्सेविता रम्या नवयौवनगर्विता ॥ २४॥

```
रक्ताम्बरपरीधाना रक्तमाल्यानुलेपना ।
कोटिकन्दर्प्यसङ्काशा चन्द्रकोटिसमप्रभा ॥। २५॥
व्याजहार महामाया सर्वान्तर्य्यामिरूपिणी ।
साक्षिणी सर्वभूतानां परब्रह्मस्वरूपिणी ॥ २६॥
(अथ उमामहिमा ।)
उमोवाच ।
न ब्रह्मा न मुरारातिर्न पुरारातिरीश्वरः ।
मद्ये गर्वितुं किञ्चित्का कथान्यसुपर्वणाम् ॥ २७॥
परं ब्रह्म परं ज्योतिः प्रणवद्वन्द्वरूपिणी ।
अहमेवास्मि सकलं मदन्यो नास्ति कश्चन ॥ २८॥
निराकारापि साकारा सर्वतत्त्वस्वरूपिणी।
अप्रतर्कागुणा नित्या कार्यकारणरूपिणी ॥ २९॥
कदाचिद्दयिताकारा कदाचित्पुरुषाकृतिः ।
कदाचिद्भयाकारा सर्वाकाराहमीश्वरी ॥ ३०॥
विरिच्चः सृष्टिकर्ताहं जगत्पाताहमच्युतः ।
रुद्रः संहारकर्ताहं सर्वविश्वविमोहिनी ॥ ३१॥
कालिका कमलावाणी मुखास्सर्वा हि शक्तयः।
मदंशादेव सञ्जातास्तथेमास्सकलाः कलाः ॥ ३२॥
मत्प्रभावाजितास्सर्वे युष्माभिद्दितिनन्दनाः ।
तामविज्ञाय मां यूयं वृथा सर्वेशमानिनः ॥ ३३॥
यथा दारुमयीं योषां नर्तयत्यैन्द्रजालिकः ।
तथैव सर्वभूतानि नर्तयाम्यहमीश्वरी ॥ ३४॥
मद्भयाद्वाति पवनः सर्वं दहति हव्यभुक् ।
लोकपालाः प्रकुर्वन्ति स्वस्वकर्माण्यनारतम् ॥ ३५॥
कदाचिद्देववर्गाणां कदाचिद्दितिजन्म नाम् ।
करोमि विजयं सम्यक्खतन्त्रा निजलीलया ॥ ३६॥
अविनाशि परं धाम मायातीतं परात्परम् ।
```

श्रुतयो वर्णयन्ते यत्तद्रूपन्तु ममैव हि ॥ ३७॥
सगुणं निर्गुणं चेति मद्रूपं द्विविधं मतम् ।
मायाश्विति चैकं द्वितीयन्तद्नाश्रितम् ॥ ३८॥
एवं विज्ञाय मां देवास्स्वं स्वं गर्वं विद्याय च ।
भजत प्रणयोपेताः प्रकृतिं मां सनातनीम् ॥ ३९॥
इति देव्या वचः श्रुत्वा करुणागर्भितं सुराः ।
तुष्टुवुः परमेशानीं भक्तिसन्नतकन्धराः ॥ ४०॥
क्षमस्व जगदीशानि प्रसीद परमेश्वरि ।
मैवं भूयात्कदाचिन्नो गर्वो मातर्द्यां कुरु ॥ ४१॥
ततःप्रभृति ते दैवा हित्वा गर्वं समाहिताः ।
उमामाराधयामासुर्यथापूर्वं यथाविधि ॥ ४२॥
इति वः कथितो विप्रा उमाप्रादुर्भवो मया ।
यस्य श्रवणमात्रेण परमं पदमश्रुते । ४३॥
इति श्रीशिवमहापुराणे पञ्चम्यामुमासंहितायामुमाप्रादुर्भाववर्णनं नामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ४९॥

उमा की उत्पत्ति

हिन्दी भावानुवाद -

ऋषियोंने कहा - हे सूतजी! अब कृपा करके उमाके अवतार का वर्णन करें जिससे सरस्वती का प्राहुर्भाव हुआ। सूतजी बोले -ऋषिगण सुनिये, एक बार देवता दैत्यों का भयानक युद्ध हुआ। तब मातेश्वरी के प्रतापसे देवता विजयी हुए। इस कारण देवताओं को गर्व हुआ। अपनी प्रशंसा करने लगे। तब उन्ही से एक कूप रूप तेज प्रकट हा।। देवताओं ने ज्यों ही उस तेजको देखा तो बहुतही घबडा गये इन्द्रसे जाकर बोले - वह क्या है? तब इन्द्रने उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा। प्रथम वायु वहां पहुँचा। उस तेजने वायुसे पूछा तू कौन है! वायु बोला में सारे जगत का प्राण हूँ। मेरे द्वारा जगत चल रहा है। सुनते ही तेजने कहा - अच्छा तो अपनी शक्ति से जरा इस तिनके को तो चलाकर दिखादो। तब वायु ने अपनी सारी शक्ति लगादी किन्तु तिनका तिलभर भी न हिल सका। वायु लज्जित होकर इन्द्रके पास पहुंचा । अपनी पराजयका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया । यह सुनकर इन्द्रने अन्य देवताओं को भी उसकी परीक्षा के लिये भेजा किन्त वे सभी पराजित हो गये। इन्द्र स्वयं वहाँ पहुंचा । इन्द्रको वहाँ आया जानकर तेज उसी समय अन्तर्धान हो गया । इन्द्र इससे अत्यन्त विस्मित हुआ । तब उस हजारनेत्रों वाले इन्द्रने विचार किया कि जो इस प्रकार की शक्ति रखता है, मैं उसकी शरण में क्यों न जाऊं? यह सोचकर मन द्वारा इन्द्र शरण को प्राप्त हुआ। वह चैत्र मास के शुक्लपक्ष की नवमी का तथा मध्याह्न का समय था। ठीक उसी समय हेतके बिना कपा करने वाली, सबका अभिमान मिटाने वाली देवी प्रकट हो गई। इन्द्रसे बोली, हे सरराज इन्द्र ! ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि भी मेरे सामने गर्व नहीं कर सकते. तो फिर अन्य देवताओंकी तो सामर्थ्यही क्या है। मैं परब्रह्म प्रणवस्वरूप देवी हूँ। मेरी कृपा से तुम लोगों न दैत्यों पर विजय पाई है। हे देवतागण ! तुम अपना अभिमान त्याग करके नम्रताके साथ मेरा भजन करो । इतना सुनकर देवताओं ने प्रणाम तथा स्तुति करके कहा - हे महामाये ! अब तो आप क्षमा करें। आगे इस प्रकार का वरदान दें जिससे हमें फिर अभिमान न हो। सूतजी बोले - तभी से देवताओं ने अभिमान त्यागकर उमादेवी की आराधना प्रारम्भ कर दी। इति ।

The manifestation of Uma

The sages said :-

- O Suta, the most excellent among the omniscients, please mention the incarnation of Uma, the goddess of all the worlds and the mother of Sarasvati.
- She is sung as the primordial Prakrti of the supreme Brahman. She is both possessed and devoid of forms. She is of the form of eternal bliss. She is Sati.

Suta said :-

- 3. O sages, listen lovingly to the great story, the perfect knowledge of which alone helps man to attain the great goal.
- Once there was a clash between the gods and the Asuras. Thanks to the power of the goddess the gods became victorious.
- Then the gods were proud and haughty. They boasted- "We are blessed. What can the Asuras do to us
- 6. Of our unbearable prowess, the Asuras are afraid. They have gone to Patala saying, "Run, run".
- 7. Then all of them proclaimed thus: "Wonderful is the strength, splendour, and good luck of the gods that has reduced the race of the Daityas.
- 8. Then a mass of splendour appeared, at the unprecedented sight of which the gods were surpiised.
- 9. Ignorant of the real glory and the intention of the goddess to quell their arrogance, the Asuras said with choking throats "What is this? What is this?"
- 10. Then the lord Indra ordered the gods "Go ye all and examine it and ascertain what it is."
- 11. Urged by Indra, the wind-god approached splendour and addressed it, "Who are you?" The splendour too put the same question to him.
- 12. Thus asked by the big mass of splendour the wind-god replied arrogantly. "I am Vayu the vital breath of the universe."
- 13. Everything in the universe, mobile or immobile, is woven like warp and woof into me. I am the support of everything. I move the entire universe."
- 14. Then the great splendour said:- "If you are competent to move, O wind-god, please move this blade of grass I have set before you. Move it as you please."
- 15. Then wind-god put forth all his efforts. But the blade of grass did not stir from its position. Then he was put to shame.

- 16. The wind-god went silently to the assembly of Indi a.
 There he narrated the details of his discomfiture.
- 17. "False is our pride that we are the lords. In fact we are helpless, insignificant creatures."
- 18. Then Indra sent all the gods. When they could not realise anything Indra himself went there.
- 19. On seeing Indra come, the unbearable splendour vanished immediately. Indra was surprised.
- 20. Then Indra thought to himself again and again "I seek refuge in him alone whose conduct is such as this."
- 21-22. In the meantime, in order to bless them and remove their arrogance, Siva, the embodied form of unde ceitful mercy, existence, knowledge and bliss, manifested herself on the ninth day of the bright half of the month Chaitra when the sun was in the middle of the day.
- 23. Shining among the mass of splendour she brightened the quarters with her brilliance. She enlightened the gods, saying "I alone am Brahman."
- 24. In her four hands she held boons, noose, goad and the mystic gesture of protection. She was served by the Vedas and looked beautiful and proud of her blooming youth.
- 25. She wore red garments and red garlands. Red sandal paste was smeared over her body. She was as dazzling as a crore of cupids. Her lustre was that of a crore moons.
- 26. The great Maya, in the form of the immanent soul of all, the cosmic witness of all living beings, and the great Brahman, spoke.

Uma said:-

- 27. Neither Brahma nor Visnu nor Siva the slayer of the Tripura demon can bluff* before me. What about the other gods?
- 28. The great Brahman, the great light in the form of the two

- Pranavas, I alone am. I am all. There is none other beside me.
- 29. Though devoid of form I possess forms. I constitute all principles. I am eternal and my attributes cannot be disputed. I am both the cause and the effect.
- 30. Sometimes I have the form of a woman, sometimes of a man. Sometimes both. I am goddess assuming all forms.
- 31. I am the creator, the protector and the destroyer of the world. I am the enchantress of the universe.
- 32. All the Saktis Kali, Lak\u00e9mi and Sarasvati as well as others are born of my parts. So also the arts originate from me.
- 38. Due to my power alone the demons are conquered by you. Without knowing me of this nature you bluff as the lords of all.
- 34. Just as a magician makes the wooden doll of a woman dance so also I the goddess make all living beings dance.
- 35. Being afraid of me the wind blows, the fire- god burns and the guardians of the quarters carry on their duties.
- 36. Independent that I am, I sportively bestow victory on the gods sometimes and on the Daityas sometimes.
- 37. It is my form that is described in the Vedas as indestructible, the great abode, the one beyond Maya and that which is greater than the greatest.
- 38. My form is two-fold Saguna and Nirguna. One is mixed with Maya and the other is free from it.
- 39. O gods, endowed with devotion, realise this and eschew your arrogance, worship me, the eternal Prakrti.
- 40. On hearing the merciful words of the goddess, the gods eulogised her, with their shoulders drooping with devotion.
- 41. O goddess of the universe, forgive us. O goddess, be pleased. O mother, let us not be arrogant again. Please be merciful.
- 42. Since then the gods began to propitiate her as before.

They eschewed their arrogance and became pure in mind.

43. O Brahmins, thus I have narrated to you the menifestation of Uma. By only hearing this men attain the great region.

The end of the manifestation of Uma.

shivapurANa, umAsaMhitA, adhyAya 49 umAmahimA verses 27-39

───

Shri Uma Devi Mahima The manifestation of Uma pdf was typeset on June 25, 2021

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com